सी.एस.आई.आर.-आई.एच.बी.टी.

आई.एच.बी.टी. में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

आई.एच.बी.टी. में सी.एस.आई.आर. स्थापना दिवस

संस्थान में 26.09.2014 को बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर डा. के. सी. बंसल, निदेशक, राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली ने "बदलती जलवायु में खाद्य सुरक्षा के लिए आनुवांशिक संसाधनों का उपयोग" विषय पर स्थापना दिवस संभाषण दिया। अपने संभाषण में डा बंसल ने बदलते वैश्विक परिवेश में आनुवांशिक संसाधनों की आवश्यकता, महत्व एवं संभावनाओं पर प्रकाश डाला। संस्थान के कार्यकारी निदेशक डा. अनिल सूद ने आये हुए अतिथियों का स्वागत किया तथा सी.एस.आई.आर. के इतिहास का संक्षिप्त परिचय देते हुए प्ररिषद की प्रमुख प्रयोगशालाओं तथा संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बदलते वैश्विक परिदृश्य, सामाजिक-आर्थिक और औद्योगिक संरचना में सीएसआईआर की भूमिका और योगदान के

बारे में बताया। बच्चों को अपने विशेष संदेश में कहा कि वे वर्तमान परिस्थितियों से उभरें और राष्ट्र के आगे ले जाने के लिए चुनौतियों को स्वीकार करें, क्योंकि यहां पर बहुत ही बढ़िया अवसर है और नई पीढ़ी से बहुत सी उम्मीदें भी है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो वी एल चोपड़ा, पूर्व सदस्य योजना आयोग, भारत सरकार ने बताया कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का स्थान अग्रणी है। उन्होंने सीएसआईआर द्वारा राष्ट्र हित तथा संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एस. के. शर्मा भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर संस्थान की प्रौद्योगिकी को अपनाने वाले उद्यमियों को सम्मानित भी किया गया। सी.एस.आई.आर. में 25 वर्ष वर्ष का सेवाकाल पूरा करने वाले एवं पिछले वर्ष सेवानिवृत हुए कर्मचारियों को सम्मानित किया गया।

इस दिन को जन दिवस के रूप में भी मनाया गया ताकि लोग संस्थान की गतिविधियों से परिचित हो सकें। इस समारोह में मांउट कारमल विद्यालय के विद्यार्थियों सहित कृषि विश्वविद्यालय, आई.वी.आर.आई., आई.जी.एफ.आर.आई. एवं अन्य विभागों के अधिकारियों, पालमपुर के गणमान्य व्यक्तियों एवं मीडिया के लोगों ने भी भाग लिया।

हिंदी दिवस समारोह-2014

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर में हिन्दी सप्ताह 2014 का मुख्य समारोह 12.09.2014 को संस्थान के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह का संचालन करते हुए पीपीएमई प्रमुख डा अपर्णा मैत्रा पति ने हिन्दी दिवस के आयोजन के उद्देश्य तथा संस्थान की राजभाषा संबन्धी गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डा. आर. डी. सिंह ने संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान किन बातो पर ध्यान देना चाहिए, के तथा कहां पर कमियां रह गई है तथा कैसे इन्हे सुधारा जा सकता है बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने संस्थान के कर्मचारियों से निवेदन किया कि वे वैज्ञानिक कार्य को छोड़कर दैनिक

काम-काज जैसे टिप्पण, पत्र लेख, रजिस्टर में प्रविष्टि आदि हिंदी में ही करें।

संस्थान के प्रशासन अधिकारी श्री जगदीश पराशर ने कर्मचारियों को राजभाषा संबन्धी आवश्यक निर्देशों की जानकारी दी तथा सभी से निवेदन किया कि वे अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करें। उन्होंने सभी को यह भी जानकारी दी कि संस्थान के सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड डाल दिया गया है तथा अब हिंदी में टंकण संबन्धी समस्या का हल हो गया है तथा सभी अपना कार्य आसानी से हिंदी में कर सकते हैं।

अपने संबोधन में संस्थान के कार्यकारी निदेशक डा. अनिल सूद ने संस्थान की गतिविधियों एवं उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने सभी कर्मचारियों से निवेदन किया कि वे शोध कार्य को छोड़कर राजभाषा नीति के अनुपालन के अपना कार्य हिंदी में ही करें। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार अन्य मामलों में अनुशासनात्मक कार्यवाही का प्रावधान है उसी प्रकार राजभाषा नीति के अनुपालन की अवहेलना के लिए भी अनुशासनात्मक प्रावधान है। परन्तु संस्थान की यह नीति है कि प्रेरणा, प्रोत्साहन से ही कार्य किया जाए परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि राजभाषा नीति के अनुपालन की अवहेलना की जाए। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में संस्थान में राजभाषा नीति के अनुपालन में प्रगति दिखाई देगी।

पीपीएमई प्रमुख डा अपर्णा मैत्रा पति ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में डा. परमार जयंती समारोह

संस्थान के सहयोग से दिनांक 4 अगस्त 2014 को संस्थान परिसर में राज्य स्तरीय डा. यशवंत सिंह परमार जयंती समारोह का आयोजन किया। इसके अन्तर्गत साहित्यिक संगोष्ठी, कवि सम्मेलन व सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के कार्यकारी निदेशक डा. अनिल सूद तथा अकादमी के सचिव एवं निदेशक, भाषा संस्कृति विभाग श्री अरुण कुमार शर्मा ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। बिलासपुर से आए कवि व लोक गायक श्री प्रकाश चन्द शर्मा ने सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की।

अकादमी के सचिव एवं निदेशक, भाषा संस्कृति विभाग श्री अरुण कुमार शर्मा ने सभी साहित्यकारों का स्वागत करते हुए अकादमी की गतिविधियों की जानकारी भी प्रदान की तथा डा. परमार की निस्वार्थ समाज सेवा के बारे में बताया। अपने संबोधन में डा. सूद ने कहा कि डा. परमार जैसे व्यक्तित्व की

जयंती का आयोजन इस संस्थान में करना एक गौरव की बात है। साहित्यिक संगोष्ठी में डा. ओम अवस्थी की अध्यक्षता में दो शोधपत्रों का वाचन किया गया। पहला पत्र 'राजनीति और संस्कृति का समवाय: डा. यशवंत सिंह परमार' विषय पर डा. तुलसी रमण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने पत्र में कहा कि डा. परमार स्वतंत्रता आन्दोलन के अन्तिम चरण में सक्रिय राजनीति में आए और उन्होंने तीन दशकों तक राजनीति में रहते हुए उच्च नैतिकता के साथ राजनीति और संस्कृति का सुदृढ़ सम्बन्ध कायम किया और हिमाचल निर्माता कहलाए। जिस पर सर्वश्री कमल के प्यासा, कमल हमीरपुरी, डा. गौतम व्यथित, डा. ओम प्रकाश राही, जय देव किरण ने चर्चा की। दूसरा पत्र डा. सुशील कुमार फुल्ल ने पढ़ा। उन्होंने अपने पत्र 'समकालीन हिंदी कहानी-21वीं शताब्दी' में समकालीन हिंदी कहानी में कुछ पुनरावृतियां सामने आ रही हैं। इस विषय पर केन्द्रित परिचर्चा में डा. हेम राज कौशिक, सैणी अशेष, डा. पीयूष गुलेरी, गंगा राम राजी, त्रिलोक मैहरा, सुदर्शन भाटिया ने भाग लिया।

डा. ओम अवस्थी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि दोनों पत्र प्रस्तोताओं ने शोधार्थी के साथ-साथ रचनाकार के अपने कर्तव्य को निभाया है। अच्छा इन्सान ही अच्छा साहित्यकार बन सकता है। डा. परमार के बारे में उन्होंने कहा कि सिध्दांत और व्यवहार की एकता ही डा. परमार की विशेषता थी। राजनीति उनकी मंजिल नहीं अपितु कर्म मानकर उसे निभाया।

दोपहर बाद 3.00 बजे कवि सत्र में कविता और गज़ल पाठ हुआ। इस कवि गोष्ठी की अध्यक्षता डा. बरयाम सिंह ने की। उनकी अध्यक्षता में सर्वश्री जयदेव विद्रोही, दीनू कश्यप, रेखा डढवाल, डा ओम अवस्थी, विक्रम मुसाफिर, प्रीतम आलमपुरी, त्रिलोक सुर्यवंशी, अतुल अशुंमाली, यज्ञदत्ता शर्मा, शेर जंग चौहान, ध्यान सिंह चौहान, सरोज परमार, कल्याण जग्गी ने अपनी नई कविताओं और गज़लों का पाठ किया। अध्यक्ष महोदय ने भी अपनी कविता का पाठ किय। निदेशक, भाषा संस्कृति श्री अरुण शर्मा ने भी कुछ कविताएं सुनाई। कवि गोष्ठी का संचालन नवनीत शर्मा ने कविता गज़ल के मध्य गज़लों के माध्यम से किया साथ ही स्वयं भी गज़ल पाठ किया।

'राजभाषा कार्यान्वयन में 'डिजिटल टूल्स का उपयोग' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला

संस्थान में दिनांक 22 सितंबर 2014 को **'राजभाषा कार्यान्वयन में डिजिटल टूल्स का उपयोग'** विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस समारोह में संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक स्टाफ ने भाग लिया। अपने स्वागत संबोधन में पीपीएमई प्रमुख डा अपर्णा मैत्रा पति ने

इस प्रशिक्षण कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला तथा कार्यशाला के संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्री राकेश शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उप-सचिव, सीएसआईआर का स्वागत किया तथा संस्थान के निमंत्रण पर यहां पधारने के लिए आभार व्यक्त किया।

अपने संबोधन में श्री राकेश शर्मा ने प्रतिभागी कर्मियों को बताया कि डिजिटल टूल्स की सहायता से कंप्यूटर पर हिंदी का उपयोग बढ़ने की असीम संभावनाएं हैं तथा इस प्रशिक्षण कार्यशाला का उदेश्य सभी कर्मचारियों को डिजिटल टूल्स के महत्व व उपयोग से परिचित कराना तथा अपने दैनिक कार्यलयी कामकाज में यूनिकोड के माध्यम से इसन टूल्स पर अभ्यास कराकर उन्हें राजभाषा हिंदी में काम करने में सक्षम बनाना है। श्री शर्मा ने कुछ बहुत ही उपयोगी डिजिटल टूल्स की जानकारी पीपीटी प्रस्तुतिकरण के माध्यम प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि इन तकनीकी टूल्स की सहायता से हिंदी में कार्य करना सरल हो गया है। अब हम यूनिकों या गूगल के माध्यम से सरलता से कप्यूटर पर हिंदी में कार्य कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि सहज डिजिटल नाम से जो वेबसाई तैयार की है उसमें सभी प्रकार के कार्यालयी पत्राचार आदि के टेम्पलेट्स तैयार किए गए हैं जिनमें बहुत कम जानकारी भरकर पत्राचार एव टिप्पण कार्य। सरलता से किया जा सकता है।

संस्थान के कार्यकारी निदेशक डा. अनिल सूद ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि भारत सरकार की राजभाषा नीति क अनुपालन करना हमारा दायित्व है तथा हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम अपना दैनिक कार्यालयी काम-काज राजभाषा हिंदी में ही करें। संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान उठाए गए मुद्दों को देखते हुए हमें राजभाषा नीति के अनुपालन एवं कार्यान्वयन के लिए गंभीर प्रयास करनें होंगे तभी हम निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने सभी वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से आह्वान किया कि वे अपना पत्राचार तथा आंतरिक नोट आदि अनिवार्य रूप से हिंदी में ही करें।

संस्थान के प्रशासन अधिकारी श्री जगदीश पराशर ने धन्यवाद प्रेषित करते हुंए श्री राकेश शर्मा, निदेशक महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने प्रतिभागियों से यह अपेक्षा की कि वे व्यावहारिक सत्रों में अपनें दैनिक कार्यालयी काम काज में विभिन्न डिज्टिल टूल्स के उपयोग के बारें में श्री शर्मा जी के अनुभवों एवं ज्ञान का लाभ उठाएंगें।

व्यावहारिक सत्र संस्थान के पुस्तकालय में आयोजित किए गए जिसमें यूनिकोड- एक सामान्य परिचय, यूनिकोड सक्रिय करना, ई-मेल का अभ्यास कराया गया। सभी कर्मियों ने इस प्रशिक्षण कार्यशाला को उपयोगी बताया। संस्थान के वरिष्ठ अनुवादक श्री संजय कुमार ने प्रतिभागी कर्मियों को विभिन्न डिजिटल टूल्स के बारे में जानकारी एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण देने के लिए श्री राकेश शर्मा का धन्यवाद किया।

शोध प्रकाशन

Arya Preeti, Kumar Gulshan, Acharya Vishal and **Singh Anil K** (2014) Genome-Wide Identification and Expression Analysis of NBS-Encoding Genes in Malus x domestica and Expansion of NBS Genes Family in Rosaceae.***PLOS One***, 9(9): ArtNo: e107987 DOI: 0.1371/journal.pone.0107987.

Bhardwaj Pooja, Ram Raja, Zaidi Aijaz A and **Hallan Vipin** (2014) Characterization of Apple stern grooving virus infecting Actinidia deliciosa (Kiwi) in India. ***Scientia Horticulturae*** , 176: 105-111.

Devi K, Sharma M and **Ahuja PS** (2014) Direct somatic embryogenesis with high frequency plantlet regeneration and successive cormlet production in saffron (*Crocus sativus* L.). ***South African Journal of Botany,*** 93: 207-216.

Ghosh Amrita, Hossain M. Musharof and **Sharma Madhu** (2014) Mass propagation of Cymbidium giganteum Wall. ex Lindl. using in vitro seedlings ***Indian Journal of Experimental Biology***, 52(9): 905-911.

Jaryan Vikrant, Uniyal Sanjay Kr., Gupta RC and **Singh RD** (2014) Phenological documentation of an invasive species, *Sapium sebiferum* (L.) Roxb. ***Environmental Monitoring and Assessment***, 186(7): 4423-4429.

Katoch Rajan, Singh Sunil Kumar, Thakur Neelam, Dutt Som, Yadav Sudesh Kumar and **Shukle Rich** (2014) Cloning, characterization, expression analysis and inhibition studies of a novel gene encoding Bowman-Birk type protease inhibitor from rice bean. ***Gene***, 546(2): 342-351.

Kaur Devinder, Thapa Pooja, Sharma Madhu, Bhattacharya Amita and **Sood Anil** (2014) *In vitro* flowering- A system for tracking floral organ development in *Dendrocalamus hamiltonii* Nees et Am. ex Munro. ***Indian Journal of Experimental Biology***, 52 (8): 825-834.

Kumar Amit, Devi Mamta and **Deshmukh Benidhar** (2014) Integrated Remote Sensing and Geographic Information System Based RUSLE Modelling for Estimation of Soil Loss in Western Himalaya, India***. Water Resources Management***, 28 (10): 3307-3317.

Kumar Arun, Kaachra Anish, Bhardwaj Shruti and **Kumar Sanjay** (2014) Copper, zinc superoxide dismutase of *Curcuma aromatica* is a kinetically stable protein. ***Process Biochemistry***, 49(8): 1288-1296.

Kumar Ashish, Kumar Shiv, Kumar Dharmesh and **Agnihotri Vijai K** (2014) UPLC/MS/MS method for quantification and cytotoxic activity of sesquiterpene lactones isolated from *Saussurea lappa*. ***Journal of Ethnopharmacology***, 155(2): 1393-1397.

Kumar Manoj, Singh RP, Panigrahy S and **Raghubanshi AS** (2014) Carbon density and accumulation in agroecosystem of Indo-Gangetic Plains and Vindhyan highlands, India. ***Environmental Monitoring and Assessment***, 186(8): 4971-4985.

Kumar R, Sood S, Sharma S, Kasana RC, Pathania VL, Singh B and **Singh RD** (2014) Effect of plant spacing and organic mulch on growth, yield and quality of natural sweetener plant Stevia and soil fertility in western Himalayas. ***International Journal of Plant Production***, 8(3): 311-333.

Kumari A, Pakade YB, Chand P, Prasad MNV and **Lal B** (2014) Comparative accounts of chromium accumulation in three ferns under hydroponic system. ***Journal of Scientific & Industrial Research***, 73(8): 553-558.

Mahajan Monika and **Yadav Sudesh Kumar** (2014) Overexpression of a tea flavanone 3-hydroxylase gene confers tolerance to salt stress and Alternaria solani in transgenic tobacco. ***Plant Molecular Biology***, 85(6): 551-573.

Mehta Mohina, Ram Raja and **Bhattacharya Amita** (2014) A simple and cost effective liquid culture system for the micropropagation of two commercially important apple rootstocks. ***Indian Journal Of Experimental Biology***, 52(7): 748-754.

Paul Asosii, Jha Ashwani, Bhardwaj Shruti, Singh Sewa, Shankar Ravi and **Kumar Sanjay** (2014) RNA-seq-mediated transcriptome analysis of actively growing and winter dormant shoots identifies non-deciduous habit of evergreen tree tea during winters. ***Scientific Reports***, 4 Art. No.: 5932, DOI: 10.1038/srep05932

Rana Shalika, Rana Ajay, Gulati Ashu and **Bhushan Shashi** (2014) RP-HPLC-DAD Determination of Phenolics in Industrial Apple Pomace. ***Food Analytical Methods***, 7(7): 1424-1432.

Reddy C. Bal, Shil Arun K, Guha Nitul Ranjan, Sharma Dharminder and **Das Pralay** (2014) Solid Supported Palladium(0) Nanoparticles: An

Efficient Heterogeneous Catalyst for Regioselective Hydrosilylation of Alkynes and Suzuki Coupling of beta-Arylvinyl Iodides. ***Catalysis Letters***, 144(9): 1530 -1536.

Sareen Bhuvnesh, Bhattacharya Amita, Sharma Madhu, Sood Anil, Ahuja Paramvir Singh (2014) A simple technique for tracking individual spore and gametophyte development in *Adiantum lunulatum* Burm. f. using modified extra thin alginate film technique. ***Indian Journal of Experimental Biology,*** 52(8): 820-824.

Singh Y, Khattar JIS, Singh DP, Rahi P and **Gulati A** (2014) Limnology and cyanobacterial diversity of high altitude lakes of Lahaul-Spiti in Himachal Pradesh, India. ***Journal of Biosciences***, 39(4): 643-657.

Sood Anil, Nadha Harleen Kaur, Sood Sangita, Walia Shivani and **Parkash Om** (2014) Large scale propagation of an exotic edible bamboo, Phyllostachys pubescens Mazel ex H. De Lehale (*Moso Bamboo*) using seeds. ***Indian Journal of Experimental Biology,*** 52(7): 755-758.

Stappen Iris, Wanner Juergen, Tabanca Nurhayat, Wedge David E, Ali Abbas, Khan Ikhlas A, Kaul Vijay K, Lal Brij, Jaitak Vikas, Gochev Velizar, Girova Tania, Stoyanova Albena, Schmidt Erich and **Jirovetz Leopold** (2014) Chemical Composition and Biological Effects of *Artemisia maritima* and *Artemisia nilagirica* Essential Oils from Wild Plants of Western Himalaya. ***Planta Medica***, 80(13) : 1079-1087.

Verma Praveen Kumar, Bala Manju, Thakur Kavita, Sharma Upendra, Kumar Neeraj and **Singh Bikram** (2014) Iron and Palladium(II) Phthalocyanines as Recyclable Catalysts for Reduction of Nitroarenes. ***Catalysis Letters***, 144(7): 1258-1267.

पुरस्कार/ सम्मान

डा. सुदेश कुमार, बरिष्ठ वैज्ञानिक को हरियाणा राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद से उनके वैज्ञानिक शोध में योगदान के लिए 'हरियाणा युवा विज्ञान रतन पुरस्कार के लिए चुला गया।

डा. संजय कुमार, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक को वर्ष 2013 के लिए वास्विक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

दूरदर्शन वार्ता

दूरदर्शन केन्द्र, शिमला

हिम स्टीविया-स्टीविया की नई नगदी फसल प्रजाति पर डा. अशोक कुमार ने दिनांक 29.07.2014 को वार्ता प्रस्तुत की।

हिम ग्लो व हिम पीस- हि.प्र. के पुष्प उत्पादकों के लिए जरबेरा की दो नई प्रजातियां पर डा. सनतसुजात सिंह एवं डा. आर.के. सूद ने दिनांक 31.07.2014 को वार्ता प्रस्तुत की।

बांस विविधिता एवं उनके उपयोग पर डा. अनिल सूद एवं डा. आर.के. सूद ने दिनांक 14.08.2014 को वार्ता प्रस्तुत की।

विदेश यात्रा

डा. दिनेश कुमार, वैज्ञानिक एवं श्री शिव कुमार, तकनीकी अधिकारी ने स्विटजरलैंड में 22-26 जुलाई 2014 को उन्नत स्पेक्ट्रोमीटर पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

समझौता/करार

चाय शीतल पेय एवं टी वाइन उत्पादन की तकनीक को मै. क्रिसन्त मल्टीट्रेड प्रा. लि. मालाड, मुम्बई के साथ 7.7.2014 को समझौता हुआ ।

चाय शीतल पेय एवं टी वाइन उत्पादन की तकनीक को मै. बैजनाथ फार्मास्यूटिक्लस के साथ 7.7.2014 को समझौता हुआ ।

पेटेंट

पेटेंट फाईलड़- विदेश में

Harsh Pratap Singh and **Ajay Rana** (2014) An economical process for purification of bio amino acids 0135NF2011/US dt. 05/08/2014, 0135NF2011/JP dt. 07/08/2014 and 0135NF2011/CN dt. 08/08/2014

पेटेंट फाईलड़- विदेश में

AMITABHA ACHARYA (2014) A novel hybrid nanocomposite material for optical/mri bimodal molecular imaging and a process for the preparation thereof 0014NF2014/IN dt. 17/06/2014

पेटेंट ग्रांटेड- विदेश से

Sinha Arun Kumar , Sharma Abhishek, Kumar Rakesh and **Sharma Naina** (2014) Microwave induced single step green synthesis of some novel 2-aryl aldehydes and their analogues, 8779200 dt. 15/07/2014

Any other

CSIR Foundation Day celebrated on 26th September 2014 at this Institute. Dr. K.C Bansal, Director, NBPGR, New Delhi delivered Foundation Day lecture on the topic entitled “Utilization of genetic resources for ensuring food security in the changing climate”. Prof. V.L. Chopra, Former Member, Planning Commission, GoI presided over the function.

संस्थान के कर्मचारियों के बच्चों की प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से आयोजित कार्यशाला में बच्चों द्वारा बनाई गई कृतियों की प्रदर्शनी लगाई गई।

संस्थान में स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2014 को डा॰ अनिल सूद, वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक ने तिरंगा फहराया। इस अवसर पर संस्थान के कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों ने भी तिरंगे को सलामी दी।

डा॰ अनिल सूद संस्थान के कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को संबोधित करते हुये

डा॰ अनिल सूद संस्थान के स्टाफ क्लब की पत्रिका "मंथन" के अगस्त अंक का विमोचन करते हुये

31 जुलाई 2014 को श्री जगत राम की सेवानिवृति के अवसर पर संस्थान के कार्यकारी निदेशक डा. अनिल सूद को सम्मानित करते हुए ।

29 अगस्त 2014 को श्री ज्ञान चन्द्र की सेवानिवृति के अवसर पर संस्थान के कार्यकारी निदेशक डा. अनिल सूद को सम्मानित करते हुए।

श्री प्रशांत कुमार बहेरा, तकनीकी अधिकारी का आईआईटी कानपुर में सहायक पुस्तकाध्यक्ष के रूप में चयन होने पर विदाई समारोह में डा. आर.डी. सिंह उन्हे सम्मानित करते हुए।

31 जुलाई 2014 को श्री जनक सिंह की सेवानिवृति के अवसर पर संस्थान के कार्यकारी निदेशक डा. अनिल सूद सम्मानित करते हुए।

संस्थान में जैवसंपदा

अलस्टोनिया स्कॉलारिस अथवा सप्तपर्णी

अलस्टोनिया स्कॉलारिस एपोसिनेसी कुल, तथा मूलतः भारतीय उपमहाद्वीप के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का सदाबहार वृक्ष है। इसका साधारण नाम 'स्कॉलर ट्री' अर्थात् अध्येताओं का वृक्ष, तथा 'डेविल ट्री' जिसका अर्थ है–शैतान का झाड़। 'अलस्टोनिया' वानस्पतिक नाम प्रतिष्ठित वनस्पति शास्त्री प्रोफेसर सी. अलस्टोन के नाम पर रखा गया है तथा इसी संदर्भ में इसका जाति नाम 'स्कॉलारिस' रखा गया है क्योंकि पारंम्परिक तौर पर इसकी लकड़ी से स्कूल के बच्चों के लिए पढ़ने हेतु तख्तियाँ बनाई जाती हैं। हिन्दी में इसे 'सप्तपर्णी' तथा 'चितवन', संस्कृत में 'सप्तपर्ण', मराठी में 'सतविन' इत्यादि नामों से जाना जाता है।

इसमें अक्तूबर माह में लघु, हरित तथा सुगंधित पुष्प लगते हैं। इस वृक्ष के सभी भाग विषाक्त माने जाते हैं। परन्तु इसकी अत्यन्त नियमित शाखाएं पेड़ को एक सुन्दर आकार प्रदान करतीं हैं। अतः इसे अलंकरण हेतु इमारतों के बाहर भी उगाया जाता है। इसकी काष्ठ कोमल होने के कारण इससे ब्लैक बोर्ड, तख्तियाँ, पैकिग हेतु बक्से, लेखन सामग्री जैसे–पेंसिल इत्यादि तथा काष्ठ का अन्य सामान भी बनाया जाता है। श्रीलंका में इसकी लकड़ी से ताबूत बनाए जाते हैं। पश्चिमी घाट क्षेत्रों के आदिवासी इस वृक्ष के नीचे बैठने से परहेज करते हैं, क्योंकि मान्यतानुसार इस पर प्रेत आत्माएं निवास करतीं हैं।

उपरोक्त उपयोगिताओं तथा किवदंतियों के बावजूद इसका औषधीय महत्व है। इसकी छाल पारंम्परिक औषधियों में अतिसार हेतु प्रयुक्त होती हैं। कड़वा व कसैला स्वाद होने के कारण आयुर्वेद में इसका उपयोग त्वचा रोग, मलेरिया, सर्पदंश व पित्त रोगों के उपचार हेतु किया जाता है। इसका दूधिया रस अल्सर के उपचार हेतु प्रयुक्त होता है। एक समय में इसकी पत्तियों का क्वाथ आयुर्वेद में 'बेरीबरी' तथा आंत्र रोगों के उपचार हेतु किया जाता रहा है।

द्वारा- श्री रणजीत सिंह

प्रकाशक = निदेशक
सी.एस.आई.आर. आई.एच.बी.टी. पालमपुर (हि.प्र.)
दूरभाष: 01894.230411 फ़ैक्स: 01894.230433
E-mail : director@ihbt.res.in
Website : http://www.ihbt.res.in

संकलन एवं संपादन =
श्री मुखत्यार सिंह, पुस्तकालय अधिकारी
श्री संजय कुमार, वरिष्ठ अनुवादक
श्री जसबीर सिंह, तकनीकी अधिकारी
श्री पवित्र गाईन, तकनीकी अधिकारी (फोटोग्राफी)